International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

21वीं सदी में भारतीय सामाजिक संरचना पर वैश्वीकरण एवं डिजिटलीकरण के प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ बबिता
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
एन.के.बी.एम. पी .जी .कॉलेज चंदौसी, संभल उत्तर प्रदेश 244412
Email lD - babitanoida**40**@gmail.com

शोध सार- 21वीं सदी में वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने भारतीय सामाजिक संरचना में व्यापक एवं तीव्र गति से परिवर्तन कर रहा है । जिससे भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज (बहु-संस्कृतियों) में सांस्कृतिक- मूल्यों, शिक्षा, आर्थिक अवसर, परिवार, विवाह, धर्म एवं सामाजिक संबंधों में तेजी से बदलाव हो रहा है। वैश्वीकरण एवं डिजिटलीकरण ने विश्व को एक 'वैश्विक गांव' में बदल दिया है। वर्तमान भारत की सामाजिक संरचना में इन प्रक्रियाओं ने संयुक्त परिवार को एकल परिवार में तीव्र रूप से वृद्धि किया है। जनगणना 2011 में एकल परिवारों की संख्या 51.7% से 52.01% रही, जो एकल परिवारों की वृद्धि को दर्शाता है। जातिगत बंधन ढीले पड़ रहे हैं। यह परिवर्तन व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, डिजिटल साक्षरता और शहरीकरण को बढ़ावा दे रहा है, लेकिन साथ ही डिजिटल विभाजन, मानसिक तनाव, सांस्कृतिक समरूपता और ग्रामीण-शहरी असमानता जैसी चुनौतियां भी उत्पन्न कर रहा है। भारत में 1991 ई. के आर्थिक उदारीकरण के बाद वैश्वीकरण की प्रक्रिया तेज हुई है। इसके साथ इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल प्लेटफार्म के प्रसार ने समाज के विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है। यह शोध पत्र द्वितीय स्रोतों जैसे पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट और डिजिटल डाटा पर आधारित है। इस शोध -पत्र का मुख्य उद्देश्य भारतीय सामाजिक संरचना पर वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण के प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है।

मुख्य शब्द - वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, सामाजिक संरचना, परिवार, सामाजिक संबंध

1. शोध पत्र के उद्देश्य

इस शोध पत्र के माध्यम से निम्नलिखित तथ्यों का विश्लेषण करना है-

- यह देखना है कि भारतीय सामाजिक संरचना को किस प्रकार वैश्वीकरण एवं डिजिटलीकरण ने प्रभावित किया है?
- क्या यदि बदलाव आए हैं तो, नवीन चुनौतियां उत्पन्न हुई है?
- डिजिटलीकरण के कारण सामाजिक संबंधों और सामाजिक संस्थाओं में होने वाले परिवर्तन के प्रभाव का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करना।
- इन सभी का अध्ययन करना इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

भारतीय सामाजिक संरचना एवं वैश्वीकरण एवं डिजिटलीकरण-भारत की सामाजिक संरचना अत्यधिक जटिल, विविधतापूर्ण और पदानुक्रमित है जो मुख्य रूप से जाति, धर्म, परिवार और क्षेत्र पर आधारित है यहां विविधता में एकता जहां सदियों से विभिन्न संस्कृतियां भाषएं और धर्म (हिंदू, मुस्लिम, ईसाई आदि) सह-अस्तित्व में रहे हैं। इस

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

संरचना की नींव पारंपरिक जाति- व्यवस्था और संयुक्त परिवार प्रणाली पर टिकी है। वैश्वीकरण एक बहुआयामी मे प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों, राष्ट्रीय सीमाओं से परे जाकर वैश्विक स्तर पर जुड़ जाती है। यह एक वैश्विक प्रक्रिया है जो निजीकरण उदारीकरण और तेज संचार माध्यम से संचालित होती है। वैश्वीकरण अंग्रेजी शब्द 'ग्लोबलाइजेशन' का हिंदी अनुवाद है यह एक व्यापक अर्थ वाला संप्रत्यय नहीं है, इसमें 'वसुधैवकुटुंबकम्' में निहित प्रेम, सम्मान एवं विश्व कल्याण की भावना नहीं है। इसकी पृष्ठभूमि में 'सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु नीरामायः' का भाव नहीं है। इसका सबके सुखी होने, किसी के दुखी होने, सब के समान होने जैसे उच्चतर सोच से कोई संबंध नहीं है। इसका प्रयोग एक आर्थिक प्रक्रिया तक सीमित है। वैश्वीकरण वस्तुतः उत्पादन एवं उपभोग, पूंजी प्रवाह, सेवाओं तथा कानून एवं राजनीति के अंतर-राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया है। यह एक ध्रुवीय संसार के अंतर्गत हो रही प्रक्रिया है। इसके द्रुत प्रसार का आधार स्तंभ जैव तकनीकी तथा सूचना संप्रेषण तकनीकी में हुई क्रांति है।

एल्ब्रो के अनुसार - "वैश्वीकरण में वे सभी प्रक्रियाएं शामिल हैं जिनके द्वारा दुनिया के लोगों को एक एकल समाज से वैश्विक समाज में शामिल किया जाता है।"

एंथनी गिंडेस के अनुसार-" वैश्वीकरण को इस प्रकार विश्व व्यापी सामाजिक संबंधों की गहनता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो दूर के इलाकों में इस तरह से जोड़े कि स्थानीय घटनाएं कई मील दूर होने वाली घटनाओं से आकार लेती हैं।"

2. भारत में वैश्वीकरण के प्रमुख आयाम

भारत में वैश्वीकरण के प्रमुख आयाम में आर्थिक, तकनीकी, सांस्कृतिक और राजनीतिक बदलाव शामिल हैं। जिसेने 1991 ई. के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व से जोड़ा है। इसमें विदेशी निवेश, व्यापार, उदारीकरण, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन, इंटरनेट, सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रमुख हैं जो विकास के साथ-साथ चुनौतियां भी उत्पन्न करती हैं ।

डिजिटलीकरण

डिजिटलीकरण सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग से सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों को डिजिटल माध्यम में परिवर्तन करने की प्रक्रिया है।

डिजिटलीकरण एक व्यापक प्रक्रिया है, जिसमें व्यावसायिक कार्यों, सेवाओं और सामाजिक प्रक्रियाओं को बेहतर तेज और कुशल बनने के लिए डिजिटल तकनीकों (जैसे क्लाउड, **AI, IOT)** का उपयोग किया जाता है । यह केवल कागजी जानकारी को डिजिटल बनानें से आगे बढ़कर डेटा और टेक्नोलॉजी के माध्यम से कार्य करने के तरीकों में मौलिक बदलाव लाता है ।भारत में डिजिटलीकरण के प्रमुख उदाहरण- डिजिटल भुगतान प्राणली, ई-कॉमर्स, ई-गवर्नेंस, ऑनलाइन शिक्षा, सोशल मीडिया आदि। आज सरकार की पहल डिजिटल इंडिया, यूपीआई और आधार ने इस प्रक्रिया को और तेज किया है।

डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के लिए नई दिल्ली में 16 से 20 फरवरी 2026 तक 'इंडिया ए आई इंपैक्ट समिट' का आयोजन किया गया। भारत मण्डपम में आयोजित

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

यह कार्यक्रम ग्लोबल साउथ में आयोजित पहला बड़ा **AI** शिखर सम्मेलन था। इसमें 118 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया और 'नई दिल्ली घोषणा' के साथ **AI** के लोकतांत्रिक और जिम्मेदार उपयोग का समर्थन किया।

वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण का सामाजिक संरचना पर प्रभाव का समाजशास्त्री विश्लेषण-

सामाजिक परिवर्तन किसी भी समाज की सहज प्रकृति है। आज भारतीय समाज में जो परिवर्तन हमें दिखाई दे रहा है वह कोई नया नहीं है, यह अवश्य है कि किसी समय यह परिवर्तन धीमी गति से होता था, तो किसी समय तीव्र गति से ।वैश्वीकरण की अवधारणा को समाजशास्त्र में पहली बार समाजशास्त्री रॉबर्ट्सन ने 1992 में दिया ।वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियां राष्ट्रीय सीमाओं से परे जाकर वैश्विक स्तर पर जुड़ जाती हैं।यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो निजीकरण, उदारीकरण और तेज संचार माध्यम से संचालित होती हैं। कनाडा के लेखक 'मार्शल मैक्लुहान' ने इसे ''विश्व गांव' की संज्ञा दिया है। इनका कहना है कि मीडिया ने संपूर्ण दुनिया को एक छोटा सा गांव बना दिया है जहां आर्थिक, संस्कृति और सामाजिक संबंध पहले की तुलना में अधिक आपस में जुड़े हैं। समाजशास्त्रीय एंथोनी गिडेंस ने समय, स्थान, दूरीकरण की अवधारणा दिया अर्थात दूरस्थ सामाजिक संबंध, स्थानीय जीवन को प्रभावित करते हैं।

भारत में वैश्वीकरण का प्रारंभ 1991 में हुआ ।भारतीय समाजशास्त्री एम.एन. श्रीनिवास एवं के. एस. सिंह ने कहा जितना अधिक सांस्कृतिक वैश्वीकरण व्यापक होगा, उतना ही अधिक क्षेत्रीयता की भाषा मजबूत होगी ।वहीं दूसरी तरफ योगेंद्र सिंह ने अपनी पुस्तक 'कल्चर चेंज इन इंडिया' में वैश्वीकरण के संदर्भ में पहचान करने की समस्या को बताया कि भारतीय सामाजिक संरचना में मूल्य, संस्थाओं और विचारधाराओं में तीव्रता से परिवर्तन आ रहा है और कहा कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने हमारे सामने कई चुनौतियां खड़ी की हैं।

डिजिटलीकरण द्वारा सामाजिक संबंधों की प्रकृति में बदलाव हो रहा है ।समाजशास्त्री मैन्युअल कैसटेल्स ने आधुनिक समाज को,"**Network society**" मे कहा है, जिसमें शक्ति, सूचना और सामाजिक संपर्क डिजिटल नेटवर्क के माध्यम से संचालित होते हैं जैसे- डिजिटल भुगतान प्रणाली, ई - गवर्नेंस, ऑनलाइन शिक्षा, सोशल मीडिया आदि।

आज भारत सरकार की पहल 'डिजिटल इंडिया 'यूपीआई' और 'आधार' ने इस प्रक्रिया को और तेज किया है।

वैश्वीकरण एवं डिजिटलीकरण का भारतीय सामाजिक संरचना पर प्रभाव-

भारतीय सामाजिक संरचना के अंतर्गत परिवार ,जाति व्यवस्था, वर्ग - संरचना, धर्म समुदाय, आदि आते हैं। वैश्वीकरण एवं डिजिटलीकरण के कारण इन संस्थानों में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं।

परिवार संस्था पर प्रभाव-

वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने परिवार संस्था को संयुक्त से एकल परिवारों में बदला है ।जिससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता बढ़ी है, लेकिन पारिवारिक बंधन कमजोर हुए हैं ।तकनीकी से डिजिटल जुड़ाव बढ़ि है, वहीं काम के दबाव और व्यक्तिवाद ने

पारिवारिक तनाव, तलाक की दर में वृद्धि और बच्चों के समाजीकरण में चुनौतियों को जन्म दिया है ।
आर्थिक स्वतंत्रता और शिक्षा के कारण महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है लेकिन ऊन पर कामकाजी और घरेलू दोनों जिम्मेदारियां का बोझ बढ़ गया है।
व्हाट्सएप और वीडियो कॉल ने भौगोलिक दूरी के बावजूद परिवारों को जोड़ रखा है। दूसरी ओर स्मार्टफोन के अत्यधिऊ उपयोग ने घर के अंदर ही संवा संवाद हीनता बढ़ा दी है । लिव-इन-रिलेशनशिप देर से विवाह और तलाक कि दर में वृद्धि जैसे वैकल्पिक जीवन शैली को स्वीकार्यता मिली है ।
अतः आधुनिक तकनीकी ने दूरियों को मिटाया है लेकिन उसने पारिवारिक रिश्तों में भौतिकवाद और अकेलेपन को भी जन्म दिया है।

जाति व्यवस्था पर प्रभाव-

वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने भारतीय जाति- व्यवस्था को गहरा प्रभावित किया है, जिससे पारंपरिक पदानुक्रम और जज-मानी व्यवस्था कमजोर हुई है। शहरीकरण, शिक्षा और निजी नौकरियों ने जाति आधारित व्यावसायों को तोड़कर अंतर-जातीय मेलजोल और बहिष्कृत जातियों के लिए आर्थिक अवसर पढ़ाए हैं। जबकि सोशल मीडिया और डिजिटल पहुंच ने जाति आधारित भेदभाव व पहचान की राजनीति को नए रूप में स्थापित किया है
आत: वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने जाति- व्यवस्था के पारंपरिक ढांचे को कमजोर कर सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाया है, लेकिन इसने जाति को खत्म नहीं किया बल्कि उसे आधुनिक, शहरी और डिजिटल स्वरूप (आधुनिक पहचान राजनीति) में बदल दिया है, जिससे यह व्यवस्था अधिक जटिल हो गई है।

वर्ग संरचना में परिवर्तन-

वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने मिलकर पारंपरिक वर्ग संरचना को पूरी तरह बदल दिया है। जिससे पारंपरिक अमीर - गरीब विभाजन के स्थान पर कौशल आधारित नए वर्ग उभरे हैं। इस प्रक्रिया ने सूचना प्रौद्योगिकी (**IT**) और सेवा क्षेत्र से जुड़े एक नए मध्यम वर्ग को जन्म दिया है। जबकि छोटे पारंपरिक व्यवसाय और असंगठित क्षेत्र के श्रमिक जैसे- कारीगर, छोटे खुदरा विक्रेता, हासीये पर चले गए।

शिक्षा में प्रभाव-

वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने शिक्षा को सुलभ और तकनीकी रूप से उन्नत बनाकर क्रांतिकारी बदलाव किया है। ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग टूल्स (**AI**, वीडियो) और विदेशी विश्वविद्यालय के साथ सहयोग ने छात्रों के लिए ज्ञान प्राप्त करने और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के अवसर बढ़ाए हैं। हालांकि इससे शिक्षा का व्यवसायीकरण भी बढ़ा है।

संस्कृति पर प्रभाव-

वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने भारतीय संस्कृति को गहरा प्रभावित किया है ।जिससे मिश्रित सांस्कृतिक पहचान विकसित हुई है ।इसने खान-पान, फैशन और जीवन- शैली

को आधुनिक (पाश्चात्य) बनाया है, साथ ही तकनीक के माध्यम से भारतीय योग और व्यंजन का वैश्विक प्रसार भी किया है।
अतः वैश्वीकरण ने जहां भारतीय संस्कृति को आधुनिक बनाया है वहीं स्थानीय परंपराओं के लिए एक चुनौती भी पेश की है ।यह बदलाव एक तरफ डिजिटल क्रांति के माध्यम से समावेशी है, तो दूसरी तरफ यह सांस्कृतिक विविधता को भी कम कर रहा है। जिससे सांस्कृतिक संकरण (**culture hybridization)** की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

रोजगार एवं अर्थव्यवस्था पर प्रभाव-

वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को तकनीकी -आधारित सेवाओं एफ डी आई और डिजिटल भुगतान यू पीआई के माध्यम से तीव्र विकास और औपचारिकता की ओर बढ़ाया है ।जो 2030 तक सकल मूल्य वर्धित (**GVA)** में 20% योगदान दे सकती है। रोजगार में, इसने उच्च- कुशल आईटी / सेवा क्षेत्र में नौकरियां बढ़ायी हैं, लेकिन स्वचालन के कारण पारंपरिक श्रम -गहन क्षेत्र में चुनौतियां भी पैदा की है। डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे फ फिलासिंग और एप आधारित सेवाओं में गिग इकोनामी को बढ़ावा दिया है।
अत: वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने भारत को वैश्विक मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया है, लेकिन इसके साथ-साथ इसने आय असमानता को भी बढ़ाया है। क्योंकि कुशल श्रमिकों को अधिक लाभ हुआ है जबकि अकुशल श्रमिक पीछे रह गए हैं।

प्रमुख चुनौतियां-

वैश्वीकरण एवं डिजिटलीकरण ने भारतीय सामाजिक संरचना में व्यापक बदलाव किए हैं, लेकिन इसके साथ ही गंभीर चुनौतियां भी आई हैं ।प्रमुख चुनौतियों में ग्रामीण - शहरी डिजिटल विभाजन, तकनीकी कौशल की कमी ,साइबर अपराध और पारंपरिक मूल्य हास, डाटा गोपनीयता आदि। ये चुनौतियां भारतीय समाज में तेजी से हो रही हैं तकनीकी बदलाव और सामाजिक- आर्थिक ढांचे के बीच संतुलन बनाने में बाधा उत्पन्न करती हैं।
निष्कर्ष-

21वीं सदी में वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने भारतीय सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन किए हैं। इन प्रक्रियाओं ने समाज को अधिक गतिशील, खुला और अवसरों से भरपूर बनाया है ।शिक्षा, रोजगार, संचार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों के साथ नई चुनौतियां भी उत्पन्न हुई हैं, जैसे - डिजिटल विभाजन, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक संकट। इसलिए यह आवश्यक है की नीतियों और सामाजिक प्रयासों के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान किया जाए। अतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने भारतीय समाज के परिवर्तन के महत्वपूर्ण कारक बन चुके हैं और आने वाले समय में इनका प्रभाव और अधिक गहरा होगा।

संदर्भ-

1. Bhambani Dr. Deepika and Tomar Dr. Arvind Singh (2000) 'Globalization and society', Registrar MP bhoj (Open) University Bhopal, Vikas publishing house Pvt. Ltd E-28 sector-8 Noida- 201 303 UP page 13, 15 ,16
2. Das, Dr. Sukanya (2001) social structure and social change, USI publication 2/31 Nehru enclave Kalkaji extn New Delhi 110019 page 7,67,99
3. Gidden's.A (2000) Runway word, How globalization is reshaping our lives London: Routledge, The Constitution of Society, 1984,
4. Shrinivas, M.N. (1962) cast in modern India and other Essays, Asia publishing House 5 Dr Yogendra Singh, Cultural Change in India, Rawat, Jaipur, 2000,
5. Sharma K.L. (2012) India social structure and change, Rawat publication
6. https://www.sanskritiias.com
7. https://www.bookganga.com
8. https://egyankos.ac.in
9. https://wikipedia.org
10. https://www.drishtiias.com

.